vari, *c. abl.* Hit. 100.22.: शरीरधर्मकोषेभ्यः ... परिहीयते; N. 19.33. 3) viribus privari, debilitari, confici, tabescere. Ur. 40.10. *infr.*: परिहीयमानैर् अङ्गैः; Mah. 3.12858. 4) deesse, deficere, desiderari. Mah. 1.747.: यत् किञ्चिद् अस्मद्गृहे परिहीयते तद् इच्छाम्य् अहम् अपरिहीयमानम् भवता क्रियमाणम्.

c. प्र 1) relinquere. Bh. 2.39.55. 2) discedere. N. 26.25.: सौहार्दश्चै 'व वत्तो न कदाचित् प्रहास्यति. — *Pass.* i. q. *Pass. simpl.* sgf. 3. Man. 4.41.

c. प्र praef. वि privari. विप्रहीण privatus, *c. instr.* Mah. 1.8142.

c. वि relinquere. N. 9.32. Bh. 2.22. — Mah. 3.8406. fut. विजहिष्यसि pro विहास्यसि. — *Etiam* A. Mah. 2.2604.: न विहास्ये वः. — विहीन 1) privatus, orbatus. N. 17.22.: पित्रा विहीनौ; R. Schl. II. 52.37.: त्वद्विहीनः te privatus, sine te. 2) solutus, liberatus, liber. Ragh. 18.13.: अनर्थैर् व्यसनैर् विहीनः.

2. हा 3. A. जिहे (anom. v. gr. 370.), praet. mltf. अहासि. Ire, cedere, recedere. Rigv. 37.7.: जिहीत पर्वतो गिरिः. (Cf. हि, gr. κιχάνω (κίχημι) forma redupl., cf. Pott II. 691.)

c. उत् 1) surgere. Rigv. 105.18.: उज्जिहीते; 9.4.: प्रति वाम् उदहासत. 2) *Trans.* sursum movere. Bhatt. 3.47.: अक्षिभ्रुवम् उज्जिहानः (schol. ऊर्ध्वं नयन्).

c. सम् ire. Nalod. 1.54.: समहास्त मुदम्.

हानि *f.* (r. हा s. नि pro ति) relictio. Bh. 2.65.

हायन *n.* (ut videtur, a r. हय् vel हि ire s. अन) annus. H. 4.23.

हारिन् (ह्र s. इन्) capiens, rapiens, *in fine comp.* N. 13.4.

हार्द *n.* (a हृद् cor s. अ) amor. Ur. 85.10.

हालहल *etiam* हालहाल *et* हालाहल *n.* veneni genus. Hit. 23.5.: हलाहलं विषम्.

हाव *m.* (ut videtur, a r. ह्वे clamare s. अ, cf. gr. 449.) nugae, ineptiae, deliciae *feminarum.* (Wils.: *Any feminine act of amorous pastime, or tending to excite amorous sensations, coquetry, blandishment, dalliance.*). In. 2.32.

हासिन् (r. हस् s. इन्) ridens, subridens, *in fine comp.* N. 3.14.

हाहाभूत *Adj.* (e हाहा heu! heu! et भूत qui est) heu! heu! clamans. Sa. 2.23. N. 17.31.

1. हि 5. P. (anom. v. gr. 443. 444. 572. गतौ K. गतौ वर्द्धने V.) 1) ire. 2) mittere. Rigv. 34.11.: वज्रं हिन्वन्ति; Bhatt. 14.36.: गदा शक्रजिता जिघ्ये (schol. प्रहिता, प्रेषिता). *Vid. praef.* प्र. 3) augere, amplificare. Rigv. 23.17.: ता नो हिन्वन्त्व् अध्वरम्. 4) tueri. Rigv. 18.4. (Cf. 2. हा, गा; fortasse lat. *cieo*, gr. κίω cum *c*, κ = ह sicut in *cor*, κέαρ; v. हिम.)

c. प्र प्रहिणोमि (v. gr. min. 94[b]. annot.) mittere. A. 8.30.: तान् अहम् ... प्राहिणवं यमसादनम्; 8.8.: अस्त्रम् ... प्राहिणवम्; 9.17. In. 4.2. — Mah. 2.1244.: स दूतान् प्राहिणोत्; Ragh. 12.84.: रथन् तस्मै प्रजिघाय पुरन्दरः.

2. हि *Conj.* 1) enim. Br. 1.16. Bh. 3.5. 2) *particula interrogativa.* H. 3.17. 3) quidem, certe. M. 6.22.26.27.

हिंस् 7. 1. et 10. P. *interdum* 1. A. हिनस्मि, हिंसामि, हिंसे, हिंसयामि (scribitur हिस्, gr. 110[a].) 1) ferire, pulsare, offendere, laedere, violare, vexare, affligere. Bhatt. 17.13.: अहिंसन् मुष्टिभिः; Mah. 3.1091.: हिंस्याश्च हिंसितः; 13685.: हिंसितो न हिंसेत; Man. 4.162.: न हिंस्याद् ब्राह्मणान्; 7.73.: अरयो न हिंसन्ति नृपन् दुर्गसमाश्रितम्; 2.180.: हिनस्ति व्रतम् आत्मनः. Occidere, interficere. H. 4.15.: न तावद् एतान् हिंसिष्ये; Man. 5.42.: पशून् हिंसन्; Mah. 3.13289.: त्वं त्व् एनम् मा हिंसीः; 13030.: अन्योन्यम् परिमुष्णन्तो हिंसयन्तश्च मानवाः. (Cf. हन् unde हिंस्, sicut e. c. लिप्स् pro लिलप्स् a लभ्, v. gr. 552. Huc trahi posset germ. vet. *geis-la* flagellum, nostrum *Geiſsel.*)

c. उप laedere, violare, vexare, affligere, damnum facere. Man. 2.73.11.26. R. Schl. II. 9.4.

c. वि *i. q. simpl.* sgf. 2. et 3. Man. 8.238. R. Schl. I. 14.15. II. 72.44.

हिंसा *f.* (r. हिंस् s. आ) offensio. Bh. 18.25. (*cf.* अहिंसा.)